Research Scholar – Ravi Kumar

Supervisor – Prof. Neeraj Kumar

Department – Hindi

Title – Hindi Aalochana ke Vikas men 'Samalochak' Patrika kee Bhumika

Notification No. - 521/2022

Notification Date – 30/09/2022

शोध – सार

पत्र-पत्रिकाएं जनतांत्रिक मूल्यों के व्यापक प्रचार-प्रसार करने का सर्वोत्तम माध्यम होती हैं । साहित्य को भी व्यापक जनसमुदाय से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही सफल हुआ । पत्र-पत्रिकाओं के विकास के साथ ही आधुनिक काल में हिंदी साहित्य के क्षेत्र का विस्तार भी हुआ । अनेक साहित्यिक विधाओं का उदय इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही हुआ, हिंदी आलोचना भी इसी माध्यम का प्रतिफलन है । परन्तु हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में साहित्य की विविध विधाओं एवं अन्य समसामयिक साहित्यिक गतिविधियों पर केंद्रित पत्रिकाएं तो बहुत रही हैं, किन्तु सिर्फ-व-सिर्फ आलोचना के विकास पर केंद्रित पत्रिका का अभाव रहा है । इस अभाव को काफी हद तक दूर करने का काम 'शिवदानसिंह चौहान' ने 1951 ई. में 'आलोचना' नामक त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से किया । इसके कुछ वर्षों बाद 1958 ई. में 'रामविलास शर्मा' ने 'समालोचक' नामक मासिक पत्रिका के माध्यम से आलोचना केंद्रित पत्रिका के सूखापन को दूर किया । दो वर्षों तक निरंतर इस पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिसमें बाईस अंक और दो विशेषांक 'सौंदर्यशास्त्र' एवं 'यथार्थवाद' नामक विषय पर प्रकाशित होते हैं । जो इस पत्रिका के आधार स्तंभ रहे हैं ।

इस शोध प्रबंध को मैंने पांच अध्यायों में विभक्त किया है – प्रथम अध्याय - हिंदी आलोचना की पीठिका और हिंदी की आरंभिक पत्र-पत्रिकाएँ है । द्वितीय अध्याय - समालोचक पत्रिका : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और सैद्धांतिक अवधारणाएं है । तीसरा अध्याय - काव्यालोचना और 'समालोचक'पत्रिका पर आधारित है । चौथा अध्याय - गद्यालोचन और 'समालोचक' है और अंतिम अध्याय पुस्तक समीक्षा और 'समालोचक' पत्रिका है ।

यह दौर हिंदी को राज भाषा बनाये जाने को लेकर राजनीतिक ऊहापोह का भी था । हिंदी की उर्दू से अस्मितापरक लड़ाई में अंग्रेजी भी आ गयी थी । समालोचक में भाषा की राजनीति से बचने का आग्रह है तो सरकारी नीतियों पर व्यंग्य भी है । रामविलास शर्मा, हिंदी भाषा को लेकर आरंभ से ही चिंतित थे । 'समालोचक' पत्रिका के माध्यम से रामविलास शर्मा ने भाषा और उसके व्याकरणिक रूप पर निरंतर लंबी बहसें की और हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा न बनने का कारण हिंदी भाषी जनता में जातीय चेतना के अभाव को माना है । सांस्कृतिक पुनर्मूल्यांकन के क्रम में धर्म और समाज का भी 'समालोचक' में परीक्षण हुआ है । समालोचक में भारतवर्ष की अन्य भाषाओं तथा हिंदी के अज्ञात साहित्य को भी सामने लाने का प्रयास किया गया है ।

समालोचक में बाल साहित्य और स्त्री लेखन पर भी पर्याप्त सामग्री मिलती है । इस अर्थ में यह पत्रिका उस समय में हाशिए के समाज के प्रति भी प्रतिबद्ध थी । हालाँकि हाशिए के समाज के प्रति साहित्यिक जागरूकता इसके बहुत बाद यानी अस्सी के दशक के आस-पास से आरंभ होती है । ऐसा इसलिए क्योंकि रामविलास शर्मा का पहला उद्देश्य यह था कि "सबसे पहले हम उस साहित्य का मूल्यांकन करते हैं, जो शोषक वर्गों के विरूद्ध श्रमिक जनता के हितों को प्रतिबिंबित करता है । इसके साथ ही इस साहित्य पर भी ध्यान देते हैं जिसकी रचना का आधार शोषित जनता का श्रम है और यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि वह वर्तमान साहित्य जनता के लिए कहां तक उपयोगी है और उसका उपयोग किस तरह हो सकता है ।"

'समालोचक' पत्रिका का एक विशिष्ट स्तंभ 'पुस्तक समीक्षा' रहा है । विशेषांकों को यदि छोड़ दे तो सभी बाईस अंको में पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित हुई है । पुस्तक समीक्षा को संपादक ने गंभीरता से लिया । इसी कारण इसमें 'मित्र धर्म का निर्वाह न होकर पुस्तकों की वस्तुनिष्ठ समीक्षा' पर जोर रहा है ।